

संगीत एवम् बाल मनोविज्ञान

डॉ. सोनदीप मोंगा

असिस्टेंट प्रोफेसर, सरकारी कॉलेज रूपनगर, पंजाब

संगीत को मानव मनोविज्ञान का प्रभावशाली तत्व समझा जा सकता है क्योंकि मनुष्य को बाल अवस्था में ही गाना और रोना प्राकृतिक रूप में प्राप्त होते हैं। जिस से वह अपने मन को हल्का और तरों-ताज़ा कर सकता है। वास्तव में संगीत मनुष्य के अन्तर मन से ही उत्पन्न होता है। गहन शोध के अनुसार विश्व के सारे राग और रागनियाँ और साज मानव मन से उत्पन्न अनहद नाद की अभिव्यक्ति हैं। इसी लिए संगीत मानव मन के आकर्षण का केन्द्र-बिन्दु है और मनुष्य को सदैव आनन्द की अवस्था में रखने के सामर्थ्य है। इस लिए शुरू में अध्यात्म और धर्म के द्वारा संगीत को मनुष्य की आत्मिक एवं रूहानी तृप्ति के तौर पर प्रतिपादित किया जाता रहा है। मनुष्य ने भी अपनी मनोसाधना और इष्ट आराधना के लिए संगीत को ही माध्यम चुना। आज के युग में मनोविश्लेषण शास्त्र बहुत प्रगति कर रहा है। इनके द्वारा बहुत से मानसिक रोग अच्छे किये जा सकते हैं। ऐसे रोगों में व्यक्ति विच्छेद, असाधारण स्मृति तथा अपस्मार आदि नाम लिया जा सकता है। मनोविश्लेषकों का कथन है कि इन रोगों को मूल शैशवावस्था के संस्कारों और वातावरण में है। इस लिए मानव सभ्यता के सही विकास में बाल-मनोविज्ञान के विश्लेषण की विशेष आवश्यकता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को अभिव्यक्त करना चाहता है यह मानव प्रकृति है। ऐसे ही बालक बालिकाएँ अपने आप को कई प्रकार से अभिव्यक्त करते हैं। उनके अभिव्यक्ति के साधन हैं—खेल, चित्रकला, हस्तकौशल लेखन, संगीत, अभिनय इत्यादि। बहुत से मनोवैज्ञानिक इन सभी अभिव्यक्ति के साधनों को उनका खेलना ही मानते हैं। क्योंकि बालक अभिव्यक्ति की ये सब क्रियाएँ स्वप्रेरणा से करते हैं, और इनके द्वारा उन्हें आनन्द की प्राप्ति होती है। लेकिन देखा गया है कि संगीत इनमें से उनको सबसे प्रिय होता है। इस लिए इस शोध पत्र में बाल मनोविज्ञान को एक उभरता हुआ कार्य-क्षेत्र बताते हुए संगीत के महत्व को आधुनिक परिवेश की आश्यकता माना गया है जिससे एक स्वस्थ समाज की संकल्पना पूर्ण की जा सकती है।

मुख्य शब्द : बाल-मनोविज्ञान, संगीत, मनोविश्लेषण, विशेष प्रशिक्षण, साहचर्य

शोध-पत्र

मानव प्रकृति के अनुसार मनुष्य एक अनुभवकर्ता और कल्पनाशील प्राणी है। जो अपने आस-पास की वस्तुओं से प्रभावित होता है साथ ही कई व्यक्तियों के सम्पर्क में आकर वह खुश होता है और कुछ से भयभीत होता है। उस की कई मनोभावनाएँ, इच्छाएँ और आकांक्षाएँ होती हैं, जो चेतन और अवचेतन स्तर पर उस को शान्ति और निराशा की तरफ धकेलती हैं। किसी शैय से वह आनन्द प्राप्त करता है तो कुछ उसकी अंतर वेदना की पीड़ा बन जाती है। मनोविज्ञान मानता है कि मनुष्य को शान्तिप्रिय ही होना चाहिए, मानसिक शान्ति तथा आनन्द के साथ ही वह अपने आप को इस पृथ्वी का सबसे उत्तम प्राणी की तरह विकसित कर सकता है। Advanced Illustrated Dictionary मनोशान्ति को मनुष्य के लिए महत्वपूर्ण संकल्प परिभाषित करती है:

Peace means of something gives you peace of mind, it stops you from worrying about a particular problem or difficulty. [1]

दूसरी और संगीत को मानव मनोविज्ञान का प्रभावशाली तत्व समझा जा सकता है क्यों कि मनुष्य को बाल अवस्था में ही गाना और रोना प्राकृतिक रूप में प्राप्त होते हैं। जिस से वह अपने मन को हल्का और तरों-ताज़ा कर सकता है। डा. कविता चक्रवर्ती अरनैस्ट हन्ट की राय के

अनुसार लिखते हैं, संगीत एक साधारण ध्वनि नहीं बल्कि सूक्ष्म अन्तरवृत्तियों के उद्घाटन का सबल साधन है। [2]

यहां तक कि प्राकृतिक आवाजें जैसे पक्षियों का चहकना, नदी की कल-कल, भंवरे की गुंजार, घोड़े की टाप, वृषों के पत्तों की भिन्नी सी आहट, मनुष्य को भी संगीतमय बना देती हैं, जिनको उसने साधारण जीवन में चरखे के घूमने की आवाज, चाटी से माखन निकालने की ताल, पाजेब की झंकार और दिल की धड़कन में सम्भाल के रखा है। मानव संस्कृति में संगीत को विश्व भाषा का स्थान दिया गया है क्योंकि विश्व संस्कृतियों में अलग-अलग संगीत होते हुए भी प्रत्येक व्यक्ति को हर जगह का संगीत आनन्दित करता है। डा. रोजी श्रीवास्तव के अनुसार 'संगीत जीवन के ताने-बाने का धागा है जिस के बिना हम सत्त, चित्त और आनन्द को प्राप्त नहीं कर सकते। संसार की सारी कलाओं और विधाओं में संगीत का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। संगीत मानसिक व्याधि की एक औषध है, विश्व का नैतिक विधान है, विश्व को सौन्दर्य प्रदान करता है। मानव मस्तिष्क में नए रंग भरता है और भावनाओं में रंगीन उड़ान भर निराशा के आंगन में आनन्द की प्रभात प्रवाहित करता है। [3]

वास्तव में संगीत मनुष्य के अन्तर मन से ही उत्पन्न होता है। गहन शोध के अनुसार विश्व के सारे राग और रागनियाँ और साज मानव मन से

उत्पन्न अनहद नाद की अभिव्यक्ति है। इसी लिए संगीत मानव मन के आकर्षण का केन्द्र-बिन्दु है और मनुष्य को सदैव आनन्द की अवस्था में रखने के सामर्थ्य है। इस लिए शुरू में अध्यात्म और धर्म के द्वारा संगीत को मनुष्य की आत्मिक एवं रूहानी तृप्ति के तौर पर प्रतिपादित किया जाता रहा है। मनुष्य ने भी अपनी मनोसाधना और इष्ट आराधना के लिए संगीत को ही माध्यम चुना।

धर्म के अनुसार संगीत माध्यम के द्वारा आत्मा सुर में आती है और मानव चरित्र निखरता है। धर्म की प्राकृति में इसे उत्तम ज्ञान माना गया है। वैदिक युग में संगीत की प्रधानता थी। हिन्दू धर्म के चार वेदों में सामवेद संगीत पर आधारित है, जिस में कृष्ण जी ने नाद को ब्रह्मा का स्वरूप माना, जो बाद में शिवजी और सरसवती माता के द्वारा भू-लोक पर प्रचार में लाया गया। समस्त रूप में भारती संस्कृति के अन्तरगत धर्म एवं संगीत का एकात्म करके ही प्रस्तुत किया गया। प्रत्येक अराधना के आरम्भ के साक्षी मंदिरों में बजते हुए शंख हैं। इस्लाम धर्म में खुदा की इबादत के लिए मस्जिद में आज्ञान के स्वरों को रूहानीयत के लिए प्रयोग किया जाता है। इसी धर्म में गिरिजाघरों में समुहगान के तौर पर धार्मिक प्रार्थना का प्रचलन है। भगवान बुद्ध खुद एक उत्तम संगीतकार थे। उन्होंने अपने सारे सिद्धांत गीत रूप में प्रचार के लिए प्रयोग किये। जैन धर्म के महावीर स्वामी ने भी अपने विचारों का प्रचार करने के लिए संगीत को माध्यम बनाया। सिक्ख धर्म में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की रचना रागबद्ध तौर पर उपलब्ध है, जिस का विशेष राग गायन परम्परा के तौर पर निर्वाह किया जाता है। माना जाता है कि गुरबाणी कीर्तन सुनने से मनुष्य के कई रोग दूर हो जाते हैं।

मनुष्य अपनी जीवन डगर पर जब भी उलझा तो उसने मनोशान्ति के लिए धर्म की टेक ली और उस से जुड़े संगीत से ही उसको मानसिक आनन्द की अनुभूति हुई। यही अनुभूति मनुष्य को मौन अथवा शून्य की अवस्था में टिकाने का कार्य करती है। चमन लाल जी मानव मन के गुंजते हुए संगीत को रूहानी प्रेम के शून्य भाव के जैसे वर्णन करते हुए लिखते हैं—

There comes a time in life of man, when the body and the brain and the mind want to feel the stillness of the universal spirit then the best thing is to do nothing that takes away all misfortune, that cures all diseases that soothes all sorrow that alone make man whole again, As in the silence that follows when the signers voice is still we gather all the meaning of the song so in the wonderful silence of his heart that Brahman loving man sees all as music, as a sublime, symphony that fills his whole being with joy. When music is over we feel no wish to speak for we want to turn our inner ear to the inner harmony and enjoy the silence. [4]

इस तरह मानसिक शान्ति और ऐसी मनोदशा को गुरबाणी संगीत में 'अनहद नाद' के साथ ब्यान किया गया है जो मानसिक आनन्द का परम स्रोत है—

कहै नानक तह सुख होआ।
तित घर अनहद वाजे ॥ [5]

पश्चिम की संस्कृति में संगीत को अधिकतर मनोवैज्ञानियों ने मनोरंजन के साधन के तौर पर लिया लेकिन भारतीय संस्कृति में भी समय और युग परिवर्तन के साथ भक्ति संगीत से अलग राज दरबारों की प्रथा और कला माध्यम में मनोरंजकता के लिए ही पेश किया जाता रहा है। परन्तु मानने योग्य है कि पश्चिम और पुरब का संगीत जैसे भी विकसित हुआ वह मन को आनन्दित करने वाला ही माना गया। मानव मनोविज्ञान और इससे जुड़ी चिकित्सा में संगीत का विशेष स्थान है। चिकित्सा क्षेत्र (Medical Science) में संगीत को जीवन तरंग अथवा लय स्वीकार किया गया है। Omraam Mikhael Aivanhov के अनुसार—

Medical Science is beginning to be aware of the beneficial effect of harmony on human health: it recognizes that many illnesses are caused by a long standing condition of inner disharmony, disharmony in people's thought and feelings etc. Doctors and Psychologists have all kinds of scientific names for this illness, but I continue to refer to them in the simplest terms which are self-explanatory and my name for all these illness is disharmony. [6]

संगीत कला एक सूक्ष्म आनन्द माध्यम है। मनोवैज्ञानिक स्तर पर मनुष्य में बाल अवस्था से ही वासना और स्मकारा दो मनोवृत्तियां सक्रिय होती हैं, जो वातावरण के सम्पर्क में आकर रस के तौर पर विकसित होती हैं, जिस को मनोविज्ञान में भावना का नाम दिया जाता है। इस प्रकार रस एक मनोस्थिति है, जिसका संगीत विधा में विभास, अनुभाव और सत्तभाव के तौर पर वर्गीकृत किया जाता है। विभास के अंतरगत आलंबन और उद्दीपन भाव विकसित होते हैं। अनुभाव क्रिया-प्रतिक्रिया का सृजन करते हैं और सत्तभाव, भावों के शारिरिक संकेतों और आवेशों के रूप में नजर आते हैं, इनको मनोभाव के तौर पर भी परिभाषित किया जाता है, जो रस के तौर पर स्थाई और संचारी भावों के तौर पर मनुष्यों में पाए जाते हैं। संगीत और साहित्य में इन मानवी मनोभावों को नव रसों के तौर पर पहचाना गया है जो मानव मनोभावनाओं का विश्लेषण भी प्रस्तुत करते हैं और उनका विरेचन भी करते हैं। जैसे शृंगार, हास्य, करुणा, रोदर, वीर, भयंकर, अदभुत, शान्त रस। संगीत में इनको शृंगार-पंचम, वीर, षड्ज, रोदर-ऋषभ, वीभत्स-धैवत, करुणा-गांधार और निषाद, हास्य-मध्यम के तौर पर गाया और अभिव्यक्ति किया जाता है जिसका उद्देश्य मानव मनोभावों को छूना ही है। यहां तक कि सारी ऋतुओं, दिनों और दिन के पहरों को भी मानवी मनोस्थिति के संग जोड़ कर रागों का सृजन किया गया। भारतीय संगीत का राग आधार यही मनोस्थितियां (Mood) है। उदाहरण के तौर पर जैसे सावन ऋतु में राग मलार, फल्गुन में राग हिन्दोल और बसन्त राग गाए जाते हैं। कई राग गायन शैलियां हैं जैसे मनुष्य की मनोस्थिति पर आधारित काफ़ी, पुरीया, मिस्रा, धनासरी। यहां तक के टौन और पिचच का ऊँचा-निचा होना भी मनोतरंगों को प्रभावित करता है। मनोवैज्ञानिक मानते हैं—

In set of studies, the relations of a few ragas to their rasas were studied using present techniques in behavioural psychology, semantics, statistics and computerization. As an example; Raga Bhairav of Hindustani music had veera (courageous) bhayanaker (fearful), Shanta (tranquil) and rasas (mental states). It was associated with autumn, early morning and white colour. These responses tally very well indeed with our ancient introspective description of the raga. [7]

मनोविश्लेषण के द्वारा मनुष्य के अचेतन मन का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। मन के दो स्वरूप होते हैं चेतन और अचेतन सामान्य मनोविज्ञान केवल चेतन मन का ही अध्ययन करता है। मनोविश्लेषण द्वारा उन क्रियाओं का भी संचालन होता है जो अचेतन मन द्वारा संचालित होती है। मनोविश्लेषण द्वारा बालकों के मन में भी दबी पड़ी भावनाओं, संवेगों आदि को बाहर निकाल कर उनके जीवन की जटिलताओं का निवारण किया जाता है। इसके अन्तर्गत बाल मन को टटोला जा सकता है उनकी भावना-ग्रन्थियों तक पहुँच कर उपचार के द्वारा उन्हें सही दिशा में साधने का प्रयत्न किया जाता है। आज के युग में मनोविश्लेषण शास्त्र बहुत प्रगति कर रहा है। इनके द्वारा बहुत से मानसिक रोग अच्छे किये जा सकते हैं। ऐसे रोगों में व्यक्ति विच्छेद, असाधारण स्मृति तथा अपस्मार (Hysteria) आदि नाम लिया जा सकता है। मनोविश्लेषकों का कथन है कि इन रोगों को मूल शैशावावस्था के संस्कारों और वातावरण में है। इस लिए मानव सभ्यता के सही विकास में बाल-मनोविज्ञान के विश्लेषण की विशेष आवश्यकता है।

आधुनिक मनुष्य भीषण चिन्ता का शिकार है। विकासशील और विकसित देशों में बढ़ रहा अन्तर, भूखमरी आर्थिक असमानताएं, समाजिक अन्याय, हिंसा, आर्थिक मन्दी भू-राजनैतिक तनाव, मंहगाई, प्रदूषण, प्राकृतिक साधनों का खुरना मानव अधिकारों का हनन, सांप्रदायिक तनाव, अँटमी युद्ध का खतरा, बढ़ रही जनसंख्या, गरीबी और मानसिक परेशानी ने आज के महामानव को कंप्यूटर संचार क्रान्ति की कल्पना की तरफ धकेल रखा है। साधनों और उपकरणों की बहुतात उसकी मानसिकता में ज्ञान का अभिप्राय बन गई है। जिस के कारण बड़ा सामाजिक परिवर्तन आ गया है। लेकिन आज का व्यक्ति एकांत भावी और स्वार्थी होता चला जा रहा है। भारतीय संस्कृति में संगीत लोरियों के साथ आनन्द में पलने वाला मनुष्य आज जीवन भर निराशा की कैद में पड़ा रहता है जिससे उसकी मनोवृत्तियां सही दिशा नहीं पकड़ती जिससे आदर्श समाज की अभिधारना अधुरी सी लगती है। मानव विकास संस्कृति के इतिहास से पता चलता है कि मनुष्य तो हर युग में राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों से गुजरा है फिर क्यों आज उसकी मानसिकता अशान्ति से भरी पड़ी है यह एक चिन्ताजनक विषय है। इस का उत्तर शायद परम्परा में ही छिपा है कि आरम्भ काल में मनुष्य के पास उस की आत्मा की तृप्ति थी, उसके अध्यात्मक मण्डल में संगीतक नाद गूँजता था उसी की कमी उसे आज बिहबल किये हुए है। नैतिक मूल्यों वाले, कला-कुशल लोगों का देश भारत आज मनोरोगियों से भरा पड़ा है।

आज के समय मनोविज्ञान एक ऐसा अनुसाशन है जो मनुष्य की अशान्ति और मनोदुविधा को समझता है और उसके लिए चिकित्सा और उपचार विज्ञान का सम्बन्ध भी मन के साथ है न कि पदार्थ और किसी तरह की भौतिकता के साथ। डा. अमर सिंह धालीवाल के मत में 'मनोविज्ञान के अर्थ है, रूह भाव आत्मा का विज्ञान, मनोविज्ञान, समस्त रूप में विज्ञान की वह शाख है जिस में मानसिक क्रियाओं और मानसिक चमत्कारों (Mental Process and Mental Phenomena) को खोजने का प्रयत्न किया जाता है। [8]

प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को अभिव्यक्त करना चाहता है यह मानव प्रकृति है। ऐसे ही बालक बालिकाएं अपने आप को कई प्रकार से अभिव्यक्त करते हैं। उनके अभिव्यक्ति के साधन हैं—खेल, चित्रकला, हस्तकौशल लेखन, संगीत, अभिनय इत्यादि। बहुत से मनोवैज्ञानिक इन सभी अभिव्यक्ति के साधनों को उनका खेलना ही मानते हैं। क्योंकि बालक अभिव्यक्ति की ये सब क्रियाएँ स्वप्रेरणा से करते हैं, और इनके द्वारा उन्हें आनन्द की प्राप्ति होती है। लेकिन देखा गया है कि संगीत इनमें से उनको सबसे प्रिय होता है। शायद माँ की गोद में ही लोरियां सुनता हुआ वह इसका अनुभव कर चुका होता है जैसे ही वह थोड़ा सा बड़ा होता है उसे खुद दोहराना शुरू कर देता है मनोविश्लेषक मानते हैं कि कई बार बच्चा माँ को संगीत की धुन दोहराने की जिद भी करता है और रुकने पर रोता भी है।

Most children are sensitive to musical rythem, The young child responds to slumber songs. He enjoys hearing his mother sing simple little nursery rhymes, and may attempt to imitate the singing in his own inept fashion. Some babies appear to singh themselves to sleep, as they make inarticulate sounds that have a more or less recognizable rhythm. [9]

बस यहीं से संगीत उसकी रूची बन जाता है। देखने में आया है कि बोलना सीखने से पूर्व ही बालक गाना सीख जाता है। सभी बालक गाते हैं, चाहे उनमें गायन सम्बन्धी क्षमता हो या न हो। पाश्चात्य देशों के विद्वानों का मत है कि शिशु का बबलता ही उसका गायन है। बालक के बबलाने में भी एक लय होती है। इसे सुनकर बालक बड़ा प्रसन्न होता है। शुरू-शुरू में बालक गाते समय कई शारीरिक क्रियाएँ भी करता है। '4-5 वर्ष की अवस्था में बालक सरल कविताएँ लय के अनुसार गा सकते हैं। वे जानते हैं कि कौन सी कविता किस लय में गाई जाएगी। यदि बालक गीत का कोई शब्द भूल जाता है, तो उसकी पूर्ति किसी अन्य शब्द के द्वारा कर लेता है। शुरू की चार कक्षाओं का बालक साधारण गीत ही गाता है, बालक बड़ा होता जाता है, वैसे-वैसे उसकी रूचि देशभक्ति-गान लोक संगीत तथा शास्त्रीय संगीत में बढ़ती जाती है बहुत से बालक धार्मिक भजनों में भी बहुत रूचि लेते हैं। [10]

बाल अवस्था में कल्पना बड़ी बलशाली होती है, दरअसल उसकी अभिव्यक्ति ही उसके पंख है वह किसी भी दिशा में फैल सकते हैं चाहे वो कलम से लिखना हो, चित्रकला हो, संगीत कला हो। मनोविज्ञानी

मानते हैं, कि बच्चों के लिए यह अभिव्यक्ति अनिवार्य है क्यों कि बड़े होने के लिए उनके अन्दर से कल्पना के संवेग निकलने अति आवश्यक है जो उनको धीरे-धीरे यथार्थ की कर्मठभूमि पर स्थापित करते हैं। संगीत इन पंखों की सही परवाज है जो कि बच्चों के मनो के अन्दर भरे वलवले और अनावश्यक संवेगों को निकाल बाहर करता है एक साधारण बालक के लिए यह सरल क्रिया है, प्रकृतिक गुण की तरह हरेक बालक में विद्यमान है तभी तो प्राथमिक पाठ्यक्रम में कविताएँ गाने का प्रावधान है, नित प्रार्थना में गाना एक प्रचलन है। लेकिन कई बालक मनोवैज्ञानिक तौर पर इसे साधना भी बना लेते हैं। रसमी शिक्षा (Formal Education) और विशेष प्रशिक्षण (Special training) के द्वारा इसे संगीत गुण में परिवर्तित किया जा सकता है, ऐसे मनोविश्लेषक मानते हैं। लेकिन प्रशिक्षण भी उनकी रूचि में से ही प्रवाहित होना चाहिए। किसी खास समय पर, यह जबरन नहीं दिया जा सकता, बालकों में यह प्राकृतिक तौर पर भी होता है और रूचि के अनुसार सिखाया भी जा सकता है। जैसे कई बच्चे घर में ही अपनी माँ के पास खड़े होकर डिब्बे बजाते हैं, दरवाजा पिटते, पेड़ों के पत्तों से पीपनी बजाते हैं, खिलौने में भी सुर हो, ऐसा वह चाहते हैं, या पहनावे में, पांव में भी कुछ बजना चाहिए, थोड़े से बड़े हुए तो डोर बैल्ल ही बार-बार बजाते हैं या साईकिल-स्कूटर का हार्न बजा कर मजा लेते हैं। यह सब उनकी संगीत रूचि की तरफ संकेत है इसका अर्थ यह नहीं कि उसको किसी साज वादन पाठ्यक्रम में डाल देना उचित होगा। बस यही कि उसका मन संगीत को मानता है और उसको किस ओर जाना है यह उस पर छोड़ दे। माँ-बाप और अध्यापक गणों को उसका साथ देना अनिवार्य है, जैसे शुरू में उसे स्कूल-बैंड में डाल के देखें अगर वह इस गुण में निखार चाहता है तो आनन्दित होगा। कहा जा सकता है कि बालक के मनोवैज्ञानिक पहलु को महत्व देकर ही माता पिता और शिक्षक को सिखलाना चाहिए क्यों कि इस पर बच्चों के जीवन की सफलता निर्भर करती है। यदि हम यह कहें कि बच्चों को संगीत कौशल ज्ञान आदि सही शिक्षण के प्रताप से प्राप्त होता है तो इसमें किसी तरह की अतिशयोक्ति न होगी। जैसे जगदानन्द पाण्डेय के मत के अनुसार—

‘शिक्षण और भ्रमवश एक ही नहीं समझना चाहिए। वस्तुतः इन दोनों प्रति-क्रियाओं में समानता होते हुए भी मनोविज्ञान के आधार पर कुछ ऐसे मौलिक अन्तर हैं जिनके कारण हम दोनों को एक कदापि नहीं कह सकते। कई विद्वानों ने साहचर्य-स्थापन प्रक्रिया को ही शिक्षण प्रक्रिया के नाम से अभिव्यक्त किया है। उनके अनुसार दो प्रत्ययों (Ideas) अंशों अथवा चीजों में किसी प्रकार का साहचर्य (Association) स्थापन करना ही शिक्षण है किसी कार्य को सीखने का तात्पर्य है उसके विभिन्न अंशों के पारस्परिक सम्बन्ध को जानना और समझना।’ [11]

जैसे किसी साज को बजाते हुए ताल और गाने के कई नियमों का अभ्यास बालक को पारस्परिक सम्बन्ध से ही ज्ञात हो जाता है वह इसे मन में बिठा लेता है इसके लिए उसे शिक्षण की अवाश्यकता नहीं रहती। आज के युग में इसी प्रकार रेडियो, टी.वी. प्रोग्राम और इंटरनेट भी

बच्चों के मनो को प्रभावित करता है जैसे रौचकता बच्चों की प्राथमिकता है वैसे ही संगीत भी उनकी रूचि में शामिल है। जो प्रोग्राम वह टी.वी. पर देखते हैं और रेडिओ पर सुनते हैं, विशेष कर संगीत से संबन्धित तो वह उसे नकल करने की कोशिश करते हैं, कई बार कई बालक-बालिकाएं तो टी.वी. और रेडिओ के माध्यम से ही संगीत सीख जाते हैं। इसके प्रावधान के लिए सरकारी तौर पर ETV का आरम्भ भी किया गया जिससे कि बच्चे टी.वी. प्रोग्राम के द्वारा कुछ सीख पाएं। यहां तक कि श्रेणीगत शिक्षा में भी इसे शामिल किया गया।

It emphasizes (in 1962) the imperative need for the development of teachers expert in the use of television and other new media in their classrooms. It points out the need to reserve future open-circuit educational television channels for the use of educational programs and the need for schools and school administrators to design school buildings and to plan equipment and facilities to provide for planning, installation and future use of educational television and other new media. [12]

कई विद्वानों का मत है कि रेडिओ और टी.वी. का गलत प्रभाव भी पड़ता है क्यों कि बच्चे सिर्फ बच्चों से सम्बन्धित प्रोग्राम ही नहीं देखते बल्कि कई और प्रोग्राम भी देखते हैं या पूरा दिन भर बस टी.वी. देखना उनकी आदत खराब कर डालता है। कई तरह के डर और सहम वे इन प्रोग्रामों से ग्रहण करता है यहां तक कि कई संगीतक भयभीत करने वाली आवाजें भी उनके जहन पर गलत प्रभाव डालती हैं लेकिन कुछ उपदेशात्मक फिल्मों में भी बन रही हैं जो बच्चों को सिखाने का अच्छा माध्यम है।

आधुनिक परिवेश में मनोविश्लेषकों ने अगर पेड़-पौधों की प्रसन्नता पर यह खोज सफलतापूर्वक कर ली है, जो संगीत के सान्निध्य में अच्छे पलते हैं तो हमारे प्रिय बच्चों की प्रसन्नता हम संगीत माध्यम से क्यों नहीं अर्जित कर सकते। इस प्रकार बाल मनोविज्ञान एक उभतरा हुआ कार्य-क्षेत्र है, जिसमें संगीत का भी महत्व है जो बच्चों के मनो को सवारने का काम कर सकता है और उनकी आदत में इसको शामिल करके ता-उमर उन्हें जीवन स्फूर्ति से भरा जा सकता है।

पाद-टिप्पणियाँ

1. C. Collins, 2009, Advanced illustrated Dictionary, Great Britain, P. 1148.
2. कविता चक्रवर्ती, संगीत की मनोवैज्ञानिक पृष्ठ भूमि, पृष्ठ 3
3. रोजी श्रीवास्तव, 2014, भैरवी (संगीत शोध-प्रत्रिका), डा. पुष्पम नारायण (सम्पा), ललित नारायण, मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा बिहार, अंक 9, पृष्ठ 20
4. Chaman Lal (Ed), 1965, Mysteries of Life and Death, Fort Lavderdable (Florida) USA, P 18

5. आदि ग्रन्थ, पृष्ठ 1041
6. Omraam Mikhael Aivanhov, 1999, Harmony and Health Prosreta, France, P. 78.
7. B. Chaitanya Deva, 1981, Mind and Music: An Introduction to Indian Music, Publication Division, Ministry of Information and Broadcasting, Govt. of India, New Delhi, P 74.
8. अमर सिंह धालीवाल, 1977, विद्ययक मनोविज्ञान पब्लिकेशन व्योरौ पंजाबी युनिवर्सिटी पटियाला, पृष्ठ 2
9. Lester D. Crow, Alice Crow, 1953, Child Psychology, Barnes & Noble, Inc, New York, P 115.
10. भाई योगेन्द्रजीत, बाल मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृष्ठ 240
11. जगदानन्द पाण्डेय, 1940, बाल मनोविज्ञान (द्वितीय संस्करण), ज्ञानपीठ लिमिटेड पटना, पृष्ठ 246
12. Marian. E. Breckentidge, M.C. and E.Lee Vincent, 1966, Child Development, Toppan Company Limited, Tokyo, Japan, P 181.